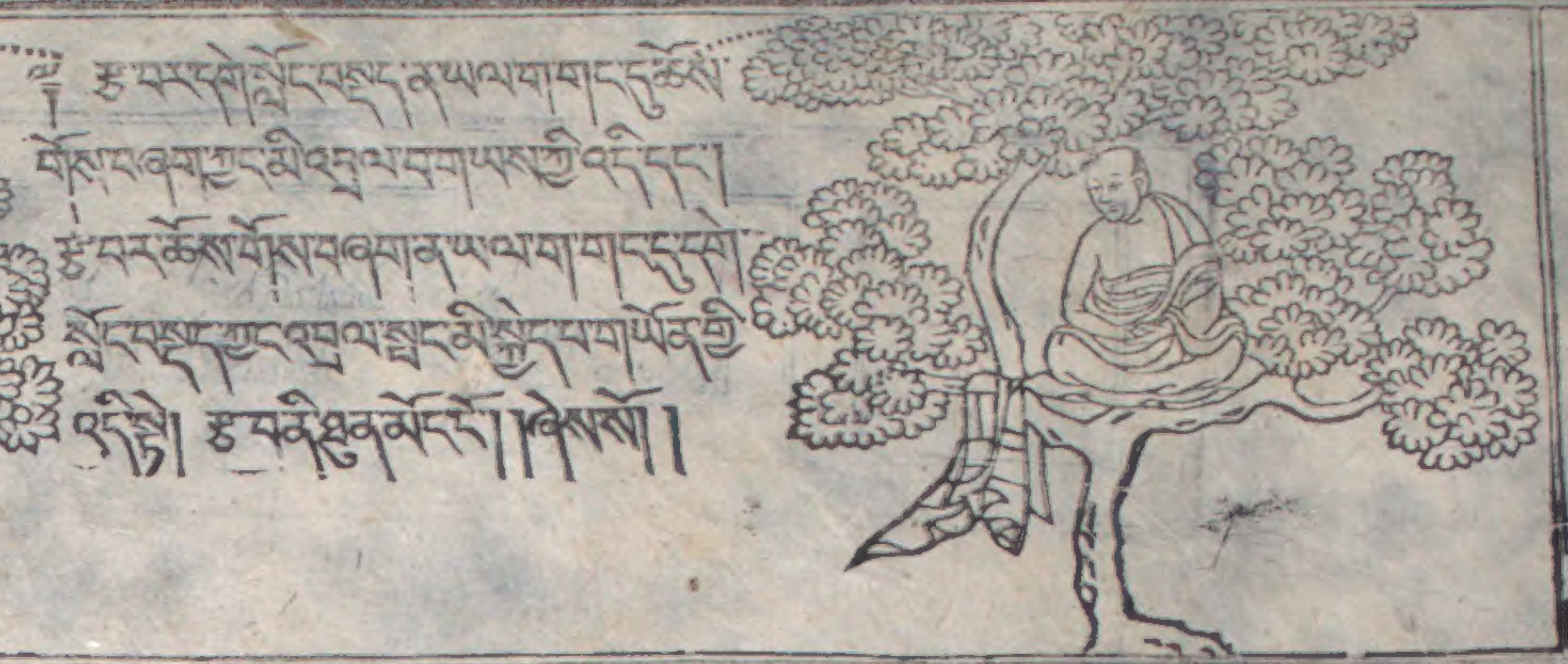


ཁོ་མཆོག་མེད་པ་ལོ་ཡལ་ག་ཕྱོད་ལ་
དགོ་སྤོང་བསྟུང་། ཡལ་ག་རྩེ་མོ་སྤོང་།
བཞག་པ་ནི་ག་ཡལ་གྱི་འདྲི་དང་། ཡལ་ག་རྩེ་
དགོ་སྤོང་བསྟུང་། ཡལ་ག་ཕྱོད་རྩེ་མོ་སྤོང་།
གོས་པ་ཞག་པ་ཡལ་གྱི་འདྲི་དང་། ག་ནི་སྤོང་ག་ཡལ་
འཇུག་པོ་སྤོང་བ་ནི་ ཡལ་ག་དང་ཡལ་ག་ཕྱོད་སྤོང་།
མེད་པ་ལོ་ཡལ་ག་ཕྱོད་འདྲི་དང་། །ཞེས་སོ། །



ཁོ་མཆོག་མེད་པ་ལོ་ཡལ་ག་ཕྱོད་ལ་
དགོ་སྤོང་བསྟུང་། ཡལ་ག་རྩེ་མོ་སྤོང་།
ཁོ་མཆོག་མེད་པ་ལོ་ཡལ་ག་ཕྱོད་ལ་
སྤོང་བསྟུང་། ཡལ་ག་ཕྱོད་རྩེ་མོ་སྤོང་བ་ཡལ་གྱི་
འདྲི་དང་། ཁོ་མཆོག་མེད་པ་ལོ་ཡལ་ག་ཕྱོད་ལ་
ཞེས་སོ། །

འཇུག་པོ་

༡༥

འཇུག་པོ་



ཆུ་བའི་ཆུ་བའ་དགོས་པ་སྤྲད་ན་
ཡལ་ག་ག་ད་དུ་ཆེས་ཤོས་པ་ཞེས་ཀྱང་
མི་འདྲུལ་བ་ག་ཡས་ཀྱི་འདྲི་དང་།
ཆུ་བའི་ཆུ་བའ་ཆེས་ཤོས་པ་ཞེས་
ན་ཡལ་ག་ག་ད་དུ་ཆེས་ཤོས་པ་སྤྲད་
ཀྱང་མི་འདྲུལ་བ་ག་ཡས་ཀྱི་འདྲི་དང་།
ཆུ་བའི་ཆུ་བའ་དགོས་པ་སྤྲད་ན་།



ཆུ་བའི་ཆུ་བའ་དགོས་པ་སྤྲད་ན་
ཡལ་ག་ག་ད་དུ་ཆེས་ཤོས་པ་ཞེས་ཀྱང་
མི་འདྲུལ་བ་ག་ཡས་ཀྱི་འདྲི་དང་།
ཆུ་བའི་ཆུ་བའ་ཆེས་ཤོས་པ་ཞེས་
ན་ཡལ་ག་ག་ད་དུ་ཆེས་ཤོས་པ་སྤྲད་
ཀྱང་མི་འདྲུལ་བ་ག་ཡས་ཀྱི་འདྲི་དང་།
ཆུ་བའི་ཆུ་བའ་དགོས་པ་སྤྲད་ན་།



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



॥ अथ यद्वर्णनं
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
॥



॥ अथ यद्वर्णनं
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
॥



॥ अथ यद्वर्णनं
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
॥



॥ अथ यद्वर्णनं
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
॥



॥ अथ यद्वर्णनं
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
॥

21
22
23

24

25

21. བཞིན་ཡུང་བ་སངས་ལྷན་པས་
ཕོ་ཕོང་གི་དཔེ་སྟེ། ཕོ་ཕོང་
ལམ་ལམ་བུ་ལོ། ཞེས་སོ།



22. དེ་ལྟར་མ་སྐྱོན་
རྒྱུ་ལ་གཅིག་པ་རྒྱུ་
ལ་འོ་དཔེ་སྟེ། རྒྱུ་ལ་ལྷན་
ཏེ། ཞེས་སོ།



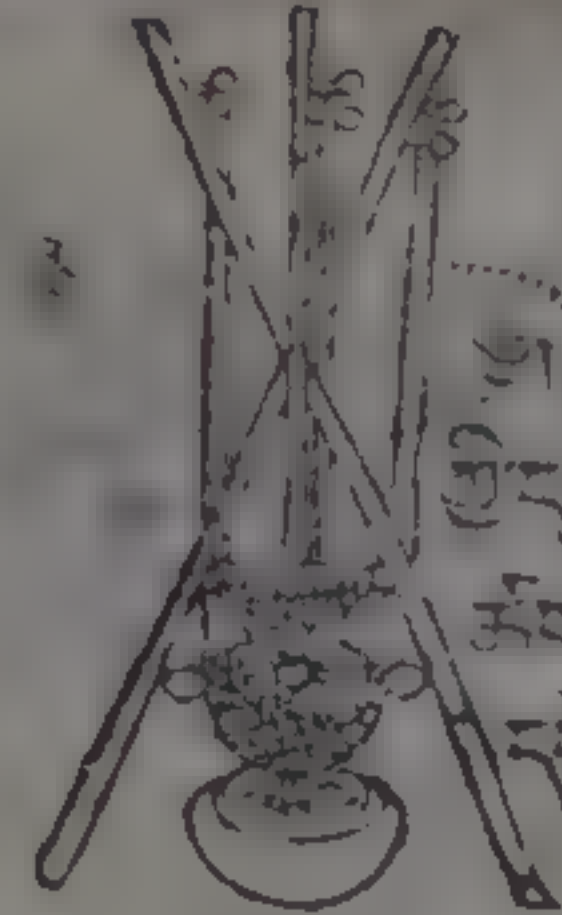
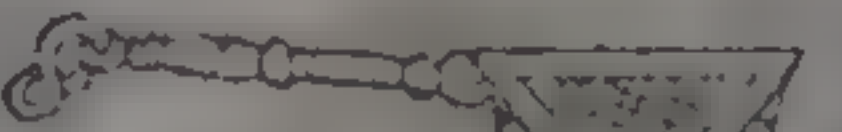
23. རྒྱུ་ལ་སྐྱོན་པ་ལྟེ།
རྒྱུ་ལ་ལྷན་པ་ལྟེ། རྒྱུ་ལ་
ལྷན་པ་ལྟེ། ཞེས་སོ།



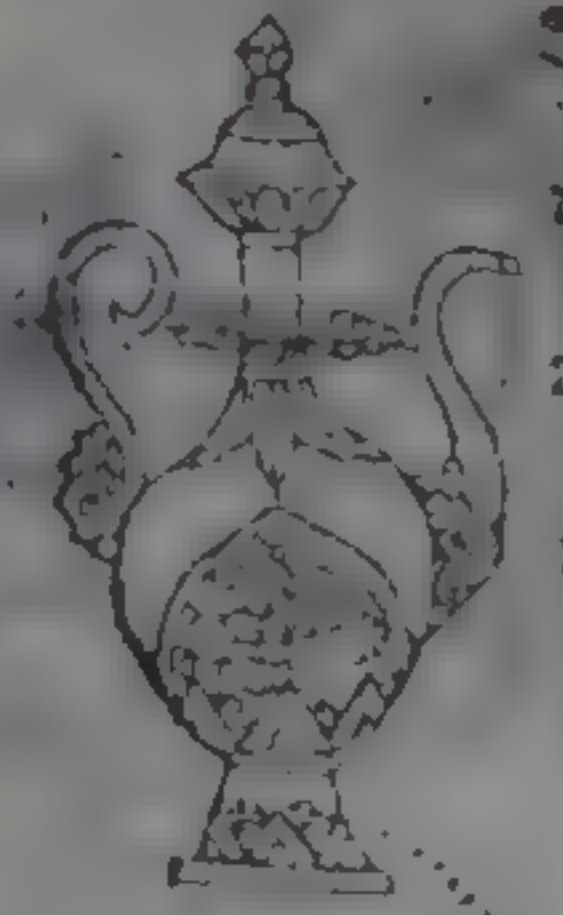
24. རྒྱུ་ལ་སྐྱོན་པ་ལྟེ།
རྒྱུ་ལ་ལྷན་པ་ལྟེ། རྒྱུ་ལ་
ལྷན་པ་ལྟེ། ཞེས་སོ།



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

[illegible]

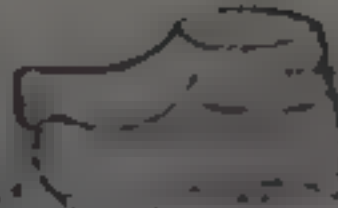
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

[illegible]

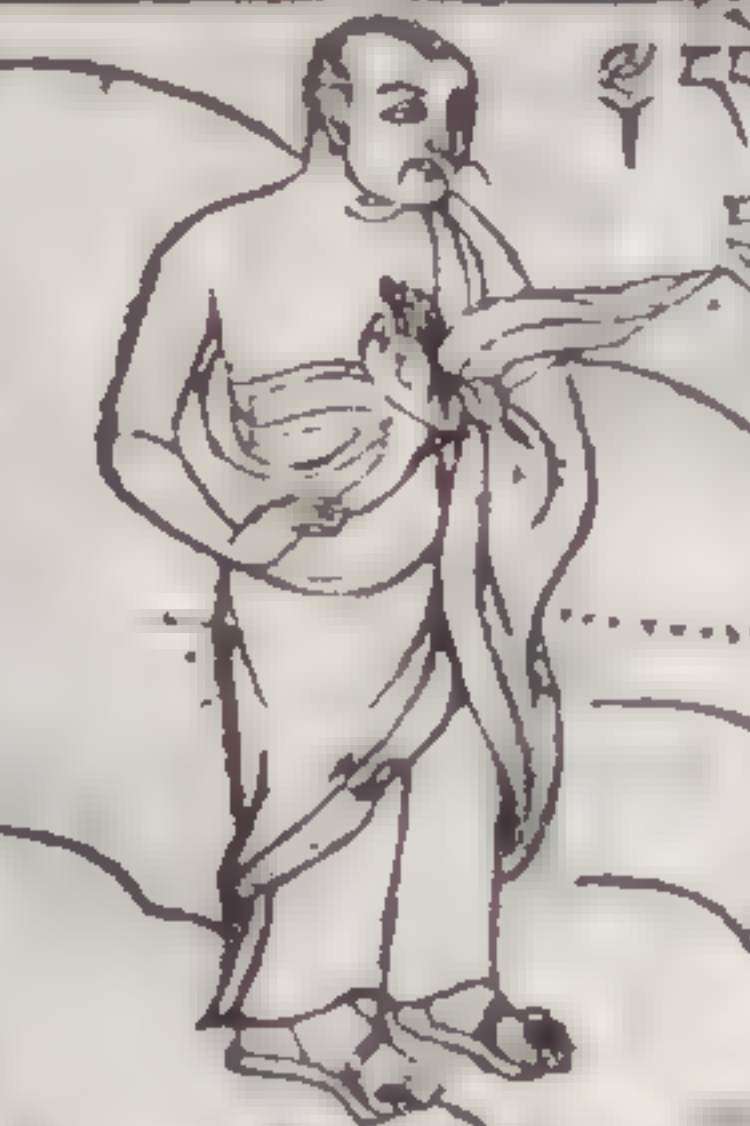
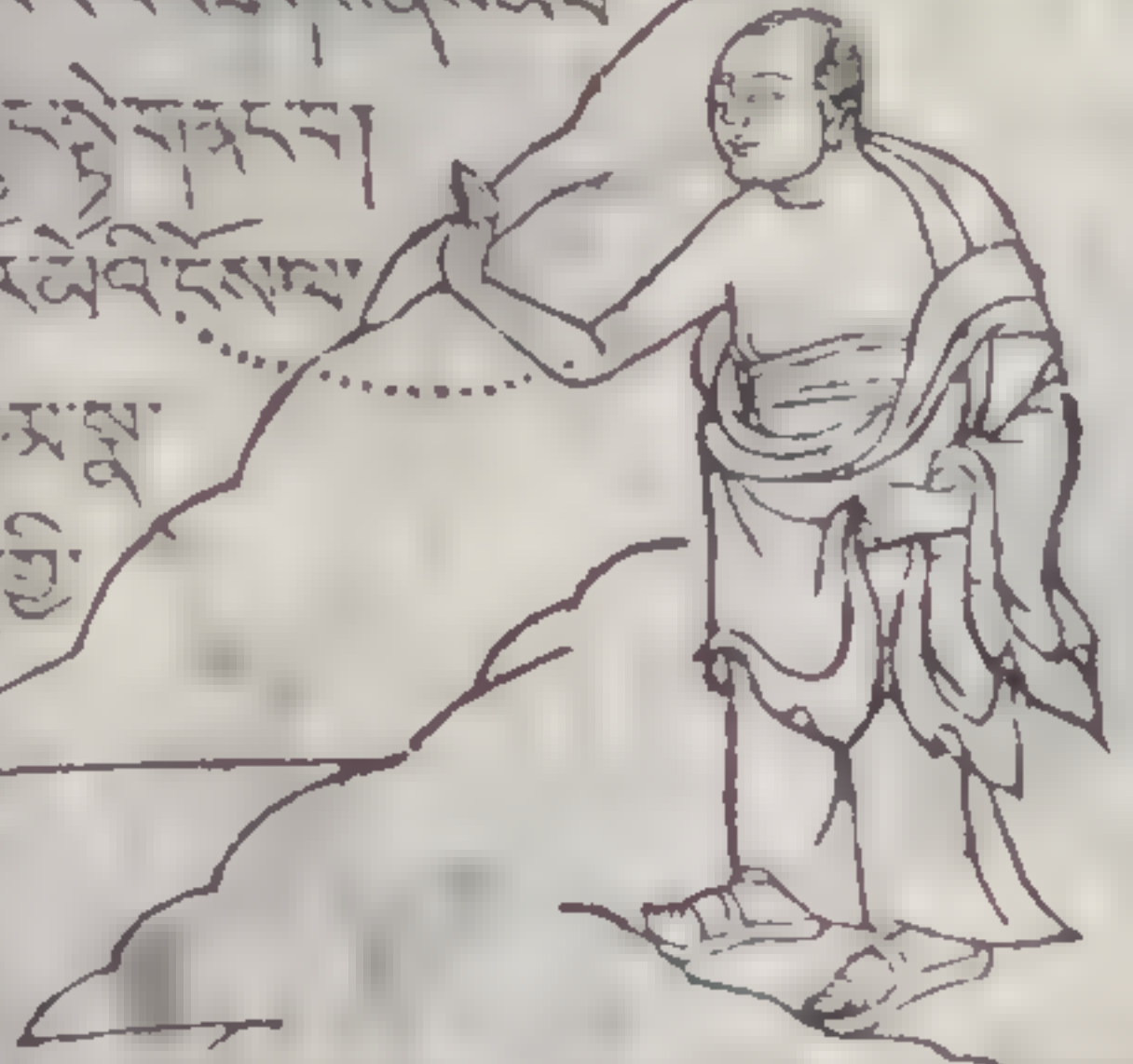
॥ त्रयम् ॥

१. प्रसन्नचित्तोऽप्यस्यैव नृपः
 यत्र नृपस्यैव नृपः स्यैव नृपः
 यत्र नृपस्यैव नृपः स्यैव नृपः
 यत्र नृपस्यैव नृपः स्यैव नृपः
 यत्र नृपस्यैव नृपः स्यैव नृपः

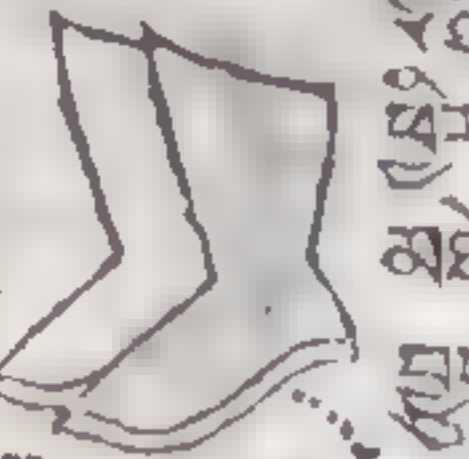
[illegible]


 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्री कृष्णार्जुनसंवादे श्री कृष्ण उवाच ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव ततः समासुराः ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सव ॥
 पाण्डुपुत्रोऽस्मि तव युयुत्वसः ॥

१॥ दधेऽहं विदुः संप्रदायं
 मयं कुरुते नमः
 नमः विदुः संप्रदायं
 विदुः संप्रदायं
 विदुः संप्रदायं



२॥ दधेऽहं विदुः संप्रदायं
 मयं कुरुते नमः
 नमः विदुः संप्रदायं
 विदुः संप्रदायं
 विदुः संप्रदायं



३॥ दधेऽहं विदुः संप्रदायं
 मयं कुरुते नमः
 नमः विदुः संप्रदायं
 विदुः संप्रदायं
 विदुः संप्रदायं



४॥ दधेऽहं विदुः संप्रदायं
 मयं कुरुते नमः
 नमः विदुः संप्रदायं
 विदुः संप्रदायं
 विदुः संप्रदायं



५॥ दधेऽहं विदुः संप्रदायं
 मयं कुरुते नमः
 नमः विदुः संप्रदायं
 विदुः संप्रदायं
 विदुः संप्रदायं



६॥ दधेऽहं विदुः संप्रदायं
 मयं कुरुते नमः
 नमः विदुः संप्रदायं
 विदुः संप्रदायं
 विदुः संप्रदायं



[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्री कृष्णार्जुनसंवादे ॥
 अथ कृष्ण उवाच ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे ॥
 समवेता संजय ॥
 मामकाः पाण्डवश्चैव ॥
 तस्यैवमब्रवीत्पुनः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ह्रीं श्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय
नमः ।

རྒྱལ་པོ་ལྷན་པ་ལ་
 རྒྱལ་པོ་ལྷན་པ་ལ་
 རྒྱལ་པོ་ལྷན་པ་ལ་
 རྒྱལ་པོ་ལྷན་པ་ལ་
 རྒྱལ་པོ་ལྷན་པ་ལ་
 རྒྱལ་པོ་ལྷན་པ་ལ་

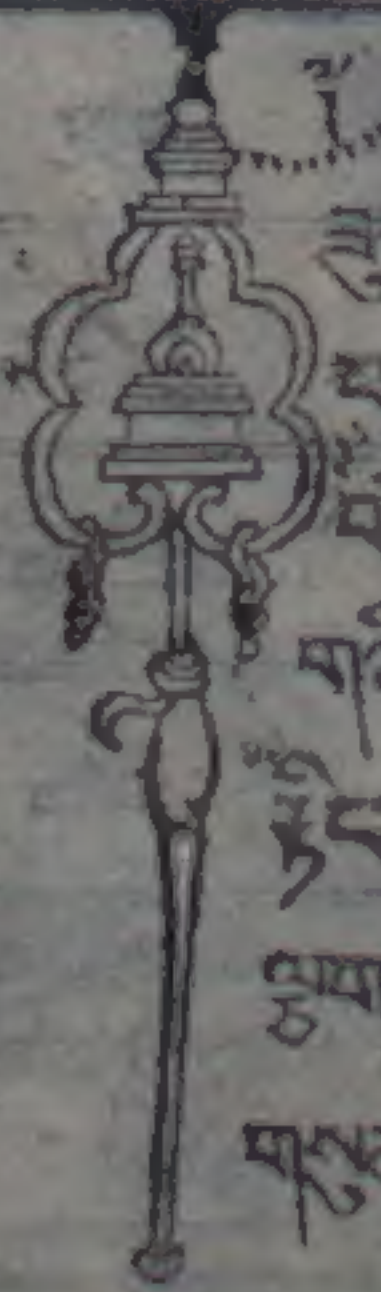
༡ དགེ་ལྡན་ལྷ་མོ་
འདུག་པ་དེ་དང་
འདི་ལྷ་མོ་འདི་
ཆེད་ཆེས་ཆེས་དང་
མཉམ་པ་འདི་དཔེ།

[illegible]

新刊
 卷之四
 目錄

吳文

πλ

[illegible][illegible]

१. ...
...
...
...
...
...
...
...
...
...

[illegible]

